पवित्रा अग्रवाल

कितनी दूर ?

बेटे मनीष की बातें- 'मेरी सारी बचत तो इंडिया आने जाने में ही ख़त्म हो जाती है ' सुन कर दुखी मन से माँ अपने कमरे में आ गई थी . पति अभी सोये हुए थे .

उसे दस वर्ष पूर्व का वह समय याद आ रहा था जब पहली बार बेटे ने सपरिवार अमेरिका जाने की बात कही थी .वह पूछ नहीं रहा था, बता रहा था कि हम अमेरिका जा रहे हैं . उदास देख कर उसने कहा था 'माँ आप उदास मत हो अमेरिका देखने दूर लगता है पर समय के हिसाब से वह दिल्ली से दूर नहीं है '

'दिल्ली और अमेरिका की क्या बराबरी है बेटा ?'

'बराबरी है माँ, यहाँ से आप ट्रेन से दिल्ली जाती हैं तो 25-26 घंटे से कम नहीं लगते . अमेरिका से आने में भी इस से ज्यादा समय नहीं लगता "

वह तब भी बहुत कुछ कहना चाहती थी पर पति ने रोक दिया था 'सुनो अब ज्यादा कुछ कहने का समय नहीं रहा ,वह जाने का मन बना चुका है,पूरी तैयारी हो चुकी है. तुम्हारे कहने से रुकने वाला नहीं है ,अच्छा होगा वास्तविकता को पहचानो और उसे स्वीकार करलो '

'स्वीकार तो कर ही रही हूँ पर यह भी जानती हूँ कि दिल्ली और अमेरिका में एक बहुत बड़ा फर्क है.अमेरिका जाने आने में लाखों लगते हैं,यहाँ तो कम पैसे हों तो थ्री टायर में चले जाओ और इमरजेंसी हो तो प्लेन से चार घंटे में पहुँच जाओ .'

वह दो साल में एक बार आ ही जाता था पर इस बार जब उसे साल में तीन बार पापा की बीमारी की वजह से आना पड़ गया तो वह परेशान हो उठा है .

आज उसने खीज भरे स्वर में कह दिया था -- ' साल भर की मेरी सारी बचत तो यहाँ आने जाने में ही लग जाती है,बचेगा क्या खाक ? ...उधर मेरे बिना रूबी को बच्चों और जॉब के साथ मैनेज करने में बहुत दिक्कत हो रही है.मैं भी कितने दिन रह पाऊंगा ?...न चाहते हुए भी मुझे जाना पड़ेगा माँ' अच्छा हुआ उसकें पापा ने यह बात नहीं सुनी .तभी उनकी आवाज आई - ' अकेले बैठे क्या सोच रही हो कांता ?...मै तो सो गया था . मनीष कहाँ है ?'

'हॉल में बैठा है .वहां बहु बच्चे अकेले हैं ,उसे आये दस दिन हो गये हैं तुम्ही कह दो कि जाना चाहे तो चला जाये ...वैसे भी वह डाक्टर तो है नहीं ,बस साथ है तो लगता है हम अकेले नहीं हैं पर एक संतोष है कि हम आर्थिक रूप से उस पर निर्भर नहीं हैं ' तभी मनीष आगया 'कैसा फील कर रहे हो पापा ?' मैं ठीक हूँ बेटा ...अभी मैं तुम्हारी माँ से यही कह रहा था कि परदेश में बहु .बच्चे अकेले हैं ,तुझे अब जाना चाहिए .'

' वहां रहता हूँ तो यहाँ की चिंता लगी रहती है ,यहाँ हूँ तो वहां की .शायद तब मैं ने गलत फैसला कर लिया था '... उसकी आवाज में नमी थी .

'और आप क्या सोच रही हो माँ ?'

' मैं सोच रही थी काश अमेरिका दिल्ली जितनी दूर होता '